सनन्ध–वैराट की जाली

ए खेल रच्यो हम खातिर, सो देखन आइयां हम।
ए जो प्यारे मेंहेदी महंमद, जेती रूह मुस्लिम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि हमारे लिए खेल बनाया गया। हम रूहें (मोमिन) अपने प्यारे इमाम मेंहदी के साथ खेल देखने आए हैं।

ए खेल को कौन देखावहीं, कौन कहे याकी सुध।
इमाम आप आए बिना, क्यों आवे वतनी बुध।। २ ।।

यह खेल कौन दिखा रहा है? कौन इसकी खबर देगा (पहचान कराएगा)? इमाम मेंहदी के आए बिना कैसे परमधाम की जागृत बुद्धि आएगी?

आई बुध वतन की, तब खुले माएने कुरान।
भी नेक बताऊं खेल या बिध, ज्यों होवे सब पेहेचान।। ३ ।।

वतन की जब जागृत बुद्धि आई, तभी कुरान के रहस्य खुले। खेल की थोड़ी हकीकत भी बता देती हूं जिससे खेल की पूरी पहचान हो जाए।

वैराट का फेर उलटा, याको मूल है आकास।
डालें पसरी पाताल में, यों कहे वेद प्रकास।। ४ ।।

इस ब्रह्माण्ड का फेरा उलटा है। इसका मूल आकाश में है और डालें पाताल में हैं। इस प्रकार वेदों का ज्ञान कहता है।

फल डाल अगोचर, आड़ी अन्तराए पाताल।
वैराट वेद दोऊ कोहेड़ा, गूंथी सो छल की जाल।। ५ ।।

इसके फल और डालियां दिखाई नहीं देतीं, यह नीचे पाताल में छिप गई हैं। वैराट और वेद दोनों धुन्ध हैं, जिन्होंने अलग-अलग अपनी जाली गूंथ रखी है।

बिध दोऊ देखिए, एक नाभ दूजा मुख।
गूंथी जालें दोऊ जुगते, मान लिए दुख सुख।। ६ ।।

दोनों की हकीकत देखिए तो वैराट की उत्पत्ति नाभि से है और वेद की उत्पत्ति मुख से है। इन दोनों की जाली गुंथी है, जिसमें सभी सुख और दुःख अनुभव करते हैं।

कोहेड़े दोऊ दो भांत के, एक वैराट दूजा वेद।
जीव जालों जाली बंधे, कोई जाने न याको भेद।। ७ ।।

वैराट तथा वेद दो तरह के धुन्ध हैं। एक वैराट दूसरा वेद, इन दोनों की जाली में ही जीव बंधे हैं, पर इसे कोई नहीं जानता।

देखलावने मोमिन को, कोहेड़े किए एह।
बताए देऊं आंकड़ी, छल बल की है जेह।। ८ ।।

मोमिनों को खेल दिखाने के लिए ही इन दोनों कोहेड़े (धुन्ध) को बनाया है। इनकी आंकड़ी (हकीकत) को मैं बता देती हूं कि यह दोनों माया के छल और शक्ति की रचना हैं।

Nijanand App

आंकड़ी एक इन भांत की, बांधी जोरसों ले।
रूह झूठी देखहीं, सांची देखे देह।। ९ ।।

एक आंकड़ी (गुत्थी) बड़ी जोर से बांधी है, जिससे आत्मा झूठी दिखती है और तन सच्चा दिखता है।

करे सगाई देहसों, नहीं रूहसों पेहेचान।
सनमंध पालें इनसों, एह लई सबों मान।। १० ।।

सारा संसार तन से रिश्ते करता है। आत्मा की पहचान होती नहीं। सारे सम्बन्ध इसी तन से ही पालते हैं। ऐसी जगत की रीति है।

न्हवाए चरचे अरगजे, प्रीते जिमावें पाक।
सनेह करके सेवहीं, पर नजर बांधी खाक।। ११ ।।

इसी तन को नहलाते हैं। सुन्दर सुगन्धित तेल लगाते हैं। बड़े प्रेम से भोजन कराते हैं। प्रेम से सेवा करते हैं। पर यह खाक है, जिससे रिश्ता गांठकर आशा लगाए बैठे हैं।

रूह गई जब अंग थें, तब अंग हाथों जालें।
सेवा जो करते सनेहसों, सो सनमंध ऐसा पालें।। १२ ।।

इसी तन से जब जीव निकल जाता है तो अपने ही हाथों से उसी तन को जला देते हैं। जो बड़े प्यार से सेवा करते थे, वह इस तरह का रिश्ता निभाते हैं।

हाथ पांव मुख नेत्र नासिका, सोई अंग के अंग।
तिन छूत लगाई घर को, प्यार था जिन संग।। १३ ।।

हाथ, पैर, मुख, नेत्र, नासिका सब अंग वही के वही रहते हैं। जिनसे आज तक बड़ा प्यार था, जीव निकल जामे के बाद वही तन अछूत हो जाता है।

अंग सारे प्यारे लगते, खिन एक रह्यो ना जाए।
चेतन चले पीछे सो अंग, उठ उठ खाने धाए।। १४ ।।

जिस तन के सभी अंग प्यारे लगते थे तथा जिनके बिना एक पल नहीं रहा जाता था, जीव निकल जाने के बाद वही दुश्मन लगता है। ऐसा लगता है कि यह हमें खा जाएगा।

सनमंधी जब चल गया, अंग वैर उपज्या ताए।
सो तबहीं जलाए के, लियो सो घर बटाए।। १५ ।।

जीव जब चला जाता है तो उसी तन से दुश्मनी हो जाती है, फिर उसे घर से निकालकर जला देते हैं, फिर घर सम्पत्ति को हिस्सों में बांट लेते हैं।

छोड़ सगाई रूह की, करें सगाई आकार।
वैराट कोहेड़ा या विध, उलटा सो कई प्रकार।। १६ ।।

आत्मा को छोड़कर तन से रिश्ता करते हैं। इस तरह का कोहेड़ा (रहस्य) कई तरह से उलटा है।

कई बिध यों उलटा, वैराट नेत्रों अंध।
चेतन बिना कहे छूत लागे, फेर तासों करे सनमंध।। १७ ।।

वैराट आंखों से अन्धा होने के कारण कई तरह से उलटा है। जब चेतन नहीं हो तो कहते हैं कि छूत लग गई और चेतन होने पर उसी से सम्बन्ध करते हैं (रिश्ता करते हैं)।

Nijanand App

एक भेख जो विप्र का, दूजा भेख चंडाल।
जाके छुए छूत लागे, ताके संग कौन हवाल।। १८ ।।

एक तन ब्राह्मण का है और दूसरा चाण्डाल का, जिसे छूने से छूत मानते हैं और उसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

चंडाल हिरदे निरमल, संग खेले भगवान।
देखावे नहीं काहू को, गोप राखे नाम।। १९ ।।

यदि चाण्डाल का हृदय निर्मल हो और उस तन में भगवान हो, वह सदा ही उसी में खेलता है और किसी प्रकार का दिखावा नहीं करता और छिपकर भगवान को रिझाता है।

अंतराए नहीं खिन की, सनेह सांचो रंग।
रात दिन नजर रूह की, नहीं वजूदसों संग।। २० ।।

चाण्डाल का भगवान से एक क्षण का अन्तर नहीं पड़ता और भगवान के प्रेम में मगन रहता है। उसकी आत्म दृष्टि सदा भगवान की तरफ रहती है। तन से उसका कोई मतलब नहीं होता।

विप्र भेख बाहेर द्रष्टी, खट करम पाले वेद।
स्याम खिन सुपने नहीं, जाने नहीं ब्रह्म भेद।। २१ ।।

ब्राह्मण का तन बाहर की दृष्टि से षट कर्मों को पालने वाला होता है। परमात्मा की विचारधारा उसके सपने में भी नहीं है और न ही उसको परमात्मा के रहस्य का पता है।

उदर कुटम कारने, उतमाई देखावे अंग।
व्याकरण वाद विवाद के, अर्थ करें कई रंग।। २२ ।।

वह अपने परिवार का पेट भरने के लिए ही शरीर की स्वच्छता और उत्तमता दिखाता है और व्याकरण के वाद-विवाद में कई तरह के अर्थ करता है।

अब कहो काके छुए, अंग लागे छोत।
अधम तम विप्र अंगे, चंडाल अंग उद्दोत।। २३ ।।

अब श्री महामतिजी पूछती हैं, बताओ। इन दोनों में से किसके तन को छूने से छूत लगनी चाहिए? ब्राह्मण का तन अन्धकार से भरा नीच है और चाण्डाल का तन भगवान के अन्दर होने से पाक और साफ है।

पेहेचान सबों वजूद की, नहीं रूह की दृष्ट।
वैराट का फेर उलटा, या विध सारी सृष्ट।। २४ ।।

संसार के सभी लोग तन को देखते हैं। आत्मा की तरफ नजर ही नहीं होती। इस तरह से सारे वैराट का फेर उलटा है।

एक देखो अचरज, चाल चले संसार।
जाहेर है ए उलटा, जो देखिए दिल विचार।। २५ ।।

एक और आश्चर्य (हैरानी) की बात देखो, जिसमें संसार चलता है। यदि दिल से विचार करके देखें तो यह जाहिरी में भी उलटा है।

Nijanand App

सांचे को झूठा कहे, झूठे को कहे सांच।
ए भी देखाऊं जाहेर, सब रहे झूठे रांच।। २६ ।।

यह सत (आत्मा) को झूठा कहते हैं और झूठे शरीर को सत माने बैठे हैं। संसार के सभी लोग झूठे शरीर में ही लिप्त हैं। इस बात को और भी जाहिर करके बताती हूं।

आकार को निराकार कहे, निराकार को आकार।
आप फिरे सब देखे फिरते, ए असत यों निरधार।। २७ ।।

यह शरीर जो मिट जाने वाला है, उसे आकार कहते हैं। आत्मा जो सदा अखण्ड है (अजर-अमर है) उसे निराकार कहते हैं। सारे जगत के जीव इसी चक्कर में घूम-फिर रहे हैं। इस तरह से यह झूठा है।

मूल बिना वैराट खड़ा, यों कहे सब संसार।
तो ख्वाब के जो दम आपे, ताए क्यों कहिए आकार।। २८ ।।

सभी संसार के लोग कहते हैं कि यह वृक्ष रूपी ब्रह्माण्ड बिना जड़ (आधार) के खड़ा है। तो इस सपने के ब्रह्माण्ड के जो जीव हैं, उन्हें आकार (साकार) कैसे कहा जाए?

आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास।
काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास।। २९ ।।

जो जन्मता और मरता है, उसे आकार (साकार) नहीं कहना चाहिए। मरने वाले को (शरीर को) निराकार और सदा रहने वाले (आत्मा) को आकार (साकार) कहना ही ठीक है (उचित है)।

जिन रांचो मृग जल दृष्टें, जाको नाम प्रपंच।
ए छल गफलत को कियो, ऐसो रच्यो उलटो संच।। ३० ।।

श्री महामति जी कहती हैं कि इस तरह के मृग जल (मृग तृष्णा) के प्रपंच (जाल) में मत फंसो। यह पूरा संसार उलटा है और संशय से भरा है।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३९५ ।।

सनन्ध–वेद का कोहेड़ा

ए खेल देख्या ख्वाब का, ए जो लरे लोक विवाद।
पर लराए इनको जिने, नेक कहूं तिनकी आद।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मैंने सपने का ब्रह्माण्ड देखा इसमें लोग आपस में लड़ते हैं। जो इनको लड़वाता है, मैं उसकी थोड़ी सी हकीकत बताती हूं।

जिन बंधे हुए अंधे, फिरे सो उलटे फेर।
सो नेक बताए पीछे, उड़ाए देऊं अन्धेर।। २ ।।

इनमें बंधे हुए अन्धे की तरह उलटे चल रहे हैं, इसलिए थोड़ी-सी हकीकत बताकर अज्ञान का अन्धकार मिटा देती हूं।

अब कहूं कोहेड़ा वेद का, जाकी मिहीं गूंथी जाल।
याकी भी नेक केहे के, देऊं सो आंकड़ी टाल।। ३ ।।

वेद के कोहेड़े (अन्धकार) की जाली बड़ी बारीक गूंथी है। इसकी थोड़ी-सी हकीकत कहकर संशय मिटा देती हूं।

Nijanand App